विपनेट क्षेत्रीय कार्यशाला रिपोर्ट -2012 देहरादून : 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2012,

पंजाब राज्य

प्रतिभागी राज्य : उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, जम्मू कशमीर, पंजाब, चंडीगढ़, देहली, हिमाचल प्रदेश

प्रस्तुति : पूजा गोयल -पंजाब (पाथ फाइडिंग सोसायटी)

विज्ञान प्रसार की क्षेत्रीय कार्यशाला के लिए जब ऑप्टीकेशन फार्म आया, तो हमने भी अपने दोस्तों के संग उसको भरवाया। 14,15,16 अक्टूबर तो कब निकल गया, पर निमंत्रण पत्र कोई नहीं आया। इतने बड़े नॉर्थ जोन में कई सलैक्ट हुए होंगे। अगली बार फिर से हम एक ट्राई लेंगे। तब तपती गर्मी में बारिश की पुहार सी, शर्मा जी की मेल आई थी। हमारे टूटे हुए दिल को ढांढस बधाया था।

दून विश्वविधालय का नाम मन को बहाये था, हरिद्वार एक्सप्रेस में हमने भी टिकट बुक करवाया था। टिकट तो बुक हो गये, पर विभाग से बात बाकि थी, कौशिक जी के ई-मेल ने ड्यटी के दौरान टिकट दिलवायी थी। 28 नवम्बर को जैसे आई. एस.बी.टी. पहुँचे विवेकानन्द की अवधारणा समझ में आयी। विश्वविधालय के फैकल्टी लॉज में प्रवीन जी को हमारे स्वागत में पाया। घर की सी फिलिंग से लॉज की चॉबी उन्होंने हमें थमायी, फिर लंच कर घाटी की सैर को निकल पड़े।

सहस्र धारा के सल्फर का पानी इकट्ठा किया, पर अधेंरे ने टराती का रास्ता बंद किया। शिरडी वाले, बाबा के फिर दर्शन किये थे, लंगर के आलू पूरी भी तो हमने लिये थे। वापसी में देखा बहुत से साथी आ पहुँचे, खाने की मेज पर फिर पुरानी यादें ताजा की। अगली सुबह कैंपस का चक्कर लगाया था, आलू पूरी खाकर, सुन्दर थैला लिये मुख्य हॉल पहुँचे थे। उद्घाटन समारोह की सादगी मन को भा गयी, पर योगेश जी की शुद्ध हिन्दी हम पंजाबी को बड़ी मुश्किल से समझ में आयी।

अतिथिगणों को पुष्प गुच्छ उन्होंने थमवाये थे, सभी से फिर विधिवत् परिचय करवाये थे। डॉ. शर्मा जी ने आते ही कुशल सैनानियों को साधुवाद दिया था। क्षेत्रीय कार्यशाला के उद्देश्य का भी व्याख्यान किया था।

आपको जानकर आश्चर्य होगा, मैं आपको एक छोटीसी बात बताती हूँ। उन्होंने कहा कि साइंस कम्यूनिकेशन का काम आसान नहीं है। मेरी तो शादी भी मुश्किल से हुई है, ताजा उदाहरण हूँ। फिर भी आप तल्लीनता से काम करते रहिये। 'यूकोस्ट' से जब राजेन्द्र डोभाल जी, डायस पर आये धीरे से उन्होंने बड़े प्रश्न उजागर किये, विज्ञान के दो पहलू उन्होंने बताये थे :

रेशम के कीड़ा सा फॉर्मल विज्ञान कुछ दे नहीं सकता। अपना ही ताना बुनता है उसी में यूरिनेशन करता है और मर जाता है। आओं उस खोल से बाहर निकल जाये, अंधविश्वासों के यूरिनेशन को दूर भगाये, फिर एक नया आतंरिक वैज्ञानिक समाज बनेगा। केवल मंच से बोलने से कुछ नहीं होगा, रियल टाइम डाटा तो कॉलैक्ट करना पड़ेगा। बिना विज्ञान के समाज का कुछ चल नहीं सकता। तो मोबाइल कनेक्टीविटि ज्यादा और टॉयलेट कम है, इस कमी को तो पूरा करना ही पड़ेगा। रेशम के कीड़े और खद्दर का जोड़ तो करना ही पड़ेगा, तभी तो बना पायेंगे एक वैज्ञानिक सोच वाला समाज।

सभी उनके विचारों में लीन हो गये थे, तभी विश्वविधालय के कुलपति जी संबोधित हुए थे। उन्होंने विश्वविधालय का उल्लेख किया और सभी का स्वागत किया।

इस अवसर पर विज्ञान प्रसार के साइंटिस्ट डॉ. राकेश उपाध्याय ने जोश में कमान संभालते हुए, अपनी धीमी आवाज में विज्ञान प्रसार के उद्देश्य पढ़ डाले। लो कोस्ट, नो कोस्ट गतिविधि का चार्ट दिखाया गया।

बाहर मौसम ने अपने रंग दिखलाये थे, लंच करते-करते बादल छाये थे। अगले सत्र में डॉ. पुनीत ने कम्यूनिकेशन सिखाये थे। उन्होंने पूछा क्या आप वैज्ञानिक कम्यूनिकेटर्स हैं, आते ही सवाल पूछा। फिर कितने ही विचारों का मंच पर मंथन हुआ था। वैज्ञानिक विचार रखने वाली बिरादरी को बढ़ाना होगा। दुविधा को खत्म कर 'सन्नी' और 'शनि' के अंतर को समझना होगा। ज्ञान को पहचानना ही काफी नहीं, इनकी समीक्षा भी करनी पडेगी। इस अवसर पर राशिद जी ने क्रियोसिटी और मंगल ग्रह

की सैर के विषय में जानकारी दी। साथ ही एल.ई.डी. लाइट के कलर्ड को देखा था।

अगले दिन विज्ञान प्रसार के साइंटिस्ट बी.के. त्यागीजी ने क्षेत्रीय कार्यशाला के मंतव्य के विषय में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही विज्ञान प्रसार की प्रतिभागियों से अपेक्षा हैं यह बताया और बहुत ही ब्रेन एक्सरसाइज उन्होंने करवा डाली। उसके बाद 'फारेन रिसर्च सेंटर' (एफ.आर.आई.) को रवाना हुए। वहाँ लगभग 6 म्यूजियम हमने देखें। वहाँ एक 750 साल पुराना वृक्ष भी हमें देखने को मिला और शाखाओं वाला पाम वृक्ष भी देखने को मिला। साथ ही डॉ. हर्ष के साथ चमत्कारी फंगस 'गैनोडर्मा' को समझा। गहरे लाल रंग की बहुत से गुण से भरपूर मशरुम भी देखने को मिली। सभी के दिमाग में नये-नये विचार उत्पन्न हुए थे।

इसके पश्चात् श्री बी.के. त्यागी जी ने सबको होमवर्क दिया। उन्होंने दो-दो प्रश्न सभी से करवाये और अपना जीवन अनुभव भी शेयर किया। यमुनानगर हरियाणा से आये श्री बवेजा जी ने ब्लॉगिंग कैसे करनी है एवं रिर्पोटिंग कैसे करनी है इस पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर बुलंदशहर के छोटे विभू एवं मेरठ के संजू के ज्ञान एवं हौसले को देखकर सभी को हैरानी थी।

इस अवसर पर योगेश जी ने फूड एडल्टरेशन के बारे में बताया, एवं अन्य विशेषज्ञ द्वारा हैम रेडियो की जानकारी दी गयी। डॉ. सुनीता ने बड़े टेलिस्कोप से आकाश के नजारे दिखाये। एवं डॉ. नमिता ने धरती के अंदर के सच एवं प्लेट के छुपे रहस्य को उजागर किया। साथ ही श्री कोशिक जी ने फ्लोटिंग बगीचा के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

मैं अपनी वाणी को विराम देते हुए यूकोस्ट, स्पीसिज, दून विश्वविधालय, विज्ञान प्रसार को धन्यवाद देती हूँ।